



SMT. HEMOPROVA CHUTIA

Smt. Hemoprova Chutia is well known handloom weaver and artist of Assam. She has unique style and skill in handloom weaving.

2. Born on 22nd September, 1955 in Photikachowa Abhoypuria Village, district Dibrugarh in the state of Assam, Smt Chutia's father was a primary school teacher. She could receive education only upto matriculation level.

3. Smt. Chutia weaved out four great books namely “Gunamala” written by Srimanta Sankardeva, “Namgukha” written by Madhabdeva and Bhagawat Gita in a unique style in her handloom, in Assamese, Sanskrit and English language. She weaved out all the text of these books in her handloom in the form of four different cloths. This is called in Assamese “Barnab-Astra”. The holy book "Gunamala " is weaved out in Assamese language. The length of the cloth is 80 ft and breadth is 18 inches, prepared in Muga cloth with Black wool. The holy book "Namgukha " is weaved out in Assamese language, with Muga silk and Black wool of length 200 ft and breadth 2 ft. The holy book "Bhagawat Gita" is weaved out in both Sanskrit and English language with Muga silk and green wool. Length of the Bhagawat Gita Sanskrit "Barnabastra" is 150 ft and breadth 2 ft. Length of the Bhagawat Gita English "Barnabastra" is 280ft and breadth is 2 ft.

4. Smt. Chutia is the recipient of numerous awards and honors including the prestigious "Assam Gourav", awarded by the Government of Assam in 2022, (one of the highest civilian awards provided by the Government of Assam) and "Prag Prerona Award" by Prag News in 2020. Similarly she also received various awards and honours from various persons, organisations and NGOs of the state of Assam, including "Aai Kanaklata Award" by Srimanta Sankardava Sangha, Assam, "Bakul Bon Bota by Bakul Ban Trust in 2017, "Hipini Kalakar Bota" by Down Town University, Guwahati in 2021 and many others.



श्रीमती हेमप्रभा सुतीया

श्रीमती हेमप्रभा सुतीया असम की सुप्रसिद्ध हथकरघा बुनकर और कलाकार हैं। हथकरघा बुनाई में उनकी अपनी अनूठी शैली और दक्षता है।

2. 22 सितंबर, 1955 को असम राज्य के डिब्रूगढ़ जिले के फोटीकचौवा अभोयपुरिया गांव में जन्मी, श्रीमती सुतीया के पिता एक प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे। उन्होंने केवल मैट्रिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की थी।
3. श्रीमती सुतीया ने हथकरघे पर एक अनूठी शैली में असमिया, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में चार महान पुस्तकें, श्रीमंत शंकरदेव द्वारा लिखित "गुणमाला", माधवदेव द्वारा लिखित "नामगुख" और भगवद्गीता बुनीं। उन्होंने हथकरघे पर चार अलग-अलग कपड़ों के रूप में इन पुस्तकों के सभी पाठ बुने। इसे असमिया में "बर्नबस्त्र" कहा जाता है। पवित्र पुस्तक "गुणमाला" असमिया भाषा में बुनी गई है। यह कपड़ा 80 फुट लंबा और 18 इंच चौड़ा है, जिसे काले ऊन के साथ मुगा कपड़े में तैयार किया गया है। पवित्र पुस्तक "नामगुख" असमिया भाषा में काले ऊन से मुगा रेशम में बुनी गई है और 200 फुट लंबी और 2 फुट चौड़ी है। धार्मिक ग्रंथ "भगवद्गीता" हरी ऊन के साथ मुगा रेशम में संस्कृत और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बुनी गई है। भगवद्गीता संस्कृत "बर्नबस्त्र" 150 फुट लंबा और 2 फुट चौड़ा है। अंग्रेजी में भगवद्गीता "बर्नबस्त्र" 280 फुट लंबा और 2 फुट चौड़ा है।
4. श्रीमती सुतीया को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें, 2022 में असम सरकार द्वारा प्रतिष्ठित "असम गौरव" पुरस्कार, (असम सरकार द्वारा प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक) और 2020 में प्राग न्यूज द्वारा "प्राग प्रेरणा अवार्ड" शामिल हैं। इसी प्रकार, उन्हें असम राज्य के विभिन्न व्यक्तियों, संगठनों और गैर-सरकारी संगठनों से भी विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें श्रीमंत शंकरदेव संघ, असम द्वारा "आई कनकलता पुरस्कार"; 2017 में बकुल बन ट्रस्ट द्वारा "बकुल बन बोटा"; 2021 में डाउन टाउन यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी द्वारा "हिपिनी कलाकर बोटा" आदि शामिल हैं।